



माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का खेल गतिविधियों से जुड़ने एवं खेल गतिविधियों में सहभागिता की प्रेरणा का अध्ययन : मिर्जापुर जिले के विशेष सन्दर्भ में

नीलरतन सिंह¹, डॉ. मृगेन्द्र सिंह परिहार²

¹शोधार्थी शारीरिक शिक्षा, लाइफ लॉग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

²प्राचार्य, शिक्षा महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

सारांश –

आज के इस नूतन तकनीकी के अत्यन्त भाग-दौड़ भरे युग के लोग यह भी स्वीकारने लगे हैं कि शारीरिक शिक्षा ही मनुष्यों को अच्छा और योग्य बना सकती है। अतः आज तक किसी भी देश के लोग शारीरिक शिक्षा के बिना सम्मानपूर्वक जीवन नहीं जी सकते हैं। केवल शैक्षणिक संस्थायें सभी विद्यार्थियों का उचित नेतृत्व नहीं कर सकती हैं। इसलिए आवश्यक है कि शारीरिक शिक्षा को प्रत्येक विद्यालयों में पूर्णतः महत्व प्रदान किया गया। इसी भाव से शोधार्थी ने मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर संचालित खेल-गतिविधियों का विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है, जो प्रमुखतः प्राथमिक सर्वेक्षित समकों पर आधारित है।



मुख्य शब्द –शारीरिक शिक्षा, विद्यालय, विद्यार्थी एवं मिर्जापुर जिला।

प्रस्तावना –

खेल व्यक्ति के जीवन का एक अभिन्न भाग है, यह व्यक्ति को स्वस्थ रखने के साथ साथ शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास का भी माध्यम है। खेलने से व्यक्ति के शरीर की क्षमता बढ़ती है तथा व्यक्ति स्वस्थ रहता है। इसके साथ ही खेल व्यक्ति को विज्ञान, मनोविज्ञान एवं नैतिकता की महत्वपूर्ण शिक्षा भी उपलब्ध करवाता है। खेल भावना एक दृष्टिकोण है, जो सच्चाई व ईमानदारीपूर्वक खेलने, विरोधियों के प्रति शिष्टाचार बरतने एवं टीम के मित्रों नैतिक व्यवहार व सत्यनिष्ठा दिखाने और जीत/हार में बड़ाई के प्रस्तुति का प्रोत्साहन प्रदान करता है। खेल मानना एक लोकाचार अथवा आकांक्षा को व्यक्त करता है कि गतिविधि का आनंद स्वयं गतिविधि ही उठाये। खेल पत्रकार ग्रांटलैंड राइस का सुप्रसिद्ध विचार है कि "यह महत्वपूर्ण नहीं है कि तुम हारे या जीते, महत्वपूर्ण यह है कि तुमने खेल को खेला" आधुनिक ओपिनियन भावना की प्रस्तुति इसके संस्थापक पियरे डी कॉबिस्टीन ने इस तरह किया है कि सर्वाधिक अहम बात है जीतना नहीं, अपितु इसमें भाग लेना। ये इस भावना की विशेष प्रस्तुतीकरण है। खेल में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं जानबूझकर आक्रामक हिंसा के मध्य की रेखा को लांघना ही हिंसा उत्पन्न करती है।

खेल सर्वाधिक रूप से सिर्फ मनोरंजन/आनन्द अथवा इनके पीछे सामान्य तथ्य को प्रस्तुत करता है कि व्यक्तियों को शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने हेतु व्यायाम करने की जरूरत है। हालांकि वे सदैव सफल कदापि

नहीं होते हैं। खेल प्रतियोगियों से खेल भावना का प्रस्तुतीकरण करने तथा विरोधियों और अधिकारियों को मान-सम्मान प्रदान करने एवं हारने का विजित व्यक्ति को शुभकामना/बधाई देने जैसे व्यवहार के मानदण्ड के पालन करने की आशा किया जाता है। राजस्थान के खेल गिल्ली डंडा एवं हापोलिया पार्ली नारियो लुक मिचली सुप्रसिद्ध खेल रहा है। इनसे शरीर को काफी लाभ प्राप्त होता है और यह खेल पूरी रात खिलाड़ियों के साथ खेलने में आनंद आता है।

खेल की कला के साथ अनेक समानताएँ हैं, आइस स्केटिंग एवं ताई ची तथा उदाहरण – डॉस स्पोर्ट, ऐसे खेल हैं जो कलात्मक दृष्टिकोण के लगभग होता है। इसी तरह जिमनास्टिक, कलात्मक शरीर सौष्ठव, पार्क आवर, योग, प्रदर्शन कला, बेसबाल, पाक कला और ड्रेसेज जैसी गतिविधियों में खेल एवं कला दोनों के तत्व दृष्टिगोचर होता है। खेल में प्रौद्योगिकी की एक अहम महत्वपूर्ण योगदान है, चाहे उनका किसी एथलीट के स्वास्थ्य हेतु उपयोग/इस्तेमाल की जाये अथवा एथलीट्स की तकनीक अथवा उपकरण की विशेषताओं के रूप में। चूँकि खेल अधिक प्रतिस्पर्धी हो गयी है, इसलिए उत्तम गुणों वाली उपकरणों की आवश्यकता में वृद्धि हुई है। नवीन तकनीक के उपयोग से गोल्फ क्लब, बेसबाल के बल्ले, फुटबॉल, हेलमेट, हॉकी, फुटबाल की गेंद एवं अन्य उपकरणों में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं। स्वास्थ्य पोषण से लेकर चोटों के उपचार तक, समय के साथ व्यक्ति के शरीर के ज्ञान में वृद्धि होने की वजह से एक खिलाड़ी की सम्भावनाएँ भी बढ़ी है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय शिक्षाविदों ने शारीरिक शिक्षण के शिक्षण का एक अविभाज्य अंग मानते हुए इसे प्राथमिक कक्षाओं से विश्वविद्यालय स्तर तक प्रतिपादित करने की व्यवस्थाएँ दी जानी चाहिए, जिसमें शिशु शालाओं, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक एवं अन्य शालाओं, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयीन स्तर पर शारीरिक शिक्षण की व्यवस्था की गई है। उसके पश्चात् भी राष्ट्रीय क्रीड़ा प्रतियोगी अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर पहुँच कर शून्य हो जाते हैं और लगभग विश्व का द्वितीय मानव संसाधनों से परिपूर्ण वृहद राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपनी पहचान भी नहीं बना पाता है। तब एक प्रश्न चिन्ह लग जाता है? कि इन सम्पूर्ण क्रीड़ा सम्बन्धी आयोजनों पर होने वाला व्यय किसलिए किये जा रहे हैं? इस प्रकार शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के महत्व को आज पुनः समझने की अत्यन्त जरूरत है। इस हेतु प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्षों के माध्यम से समाधान तक सहजतापूर्वक पहुँचता जा सकता है।

विश्लेषण –

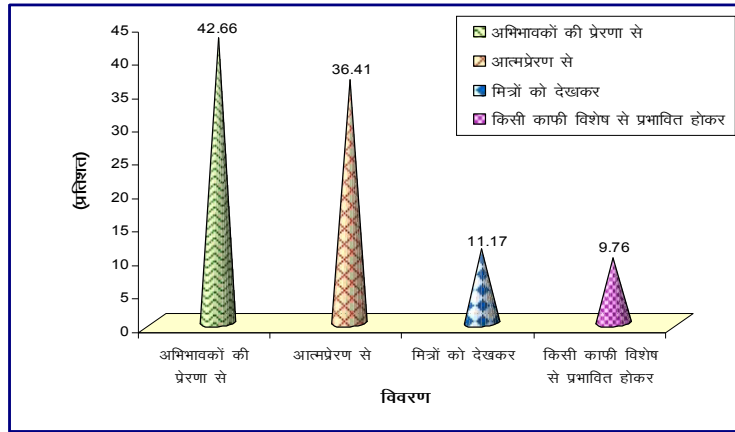
भारत के हृदय स्थल उत्तरप्रदेश के दक्षिणी पूर्वी में विद्यमान मिर्जापुर जिला मुख्यालय केन्द्र और नगर है। व्यापक स्वरूप में प्राकृतिक सम्पदा तथा वातावरण की विविधताओं से परिपूर्ण और प्राकृतिक सुन्दरता स्वयं में समेटे हुई है। साक्ष्य के रूप में किसी चित्रकार की सारणी से निर्मित हुआ अमर चित्र के समरूप है। इस भूखण्ड में कई प्रकार की विविधताएँ और विभिन्नताएँ स्थित हैं। विंध्यांचल पहाड़ों की उपस्थिति के कारण ग्रामीण अंचल की प्रकृति, धर्म, सभ्यता, रीति-रिवाज, रहन-सहन इत्यादि विविधताएँ अपने हृदय स्थल में निहित किये हुए हैं, जिसे विविधताओं का क्षेत्र से सम्बोधित किया जाता है। मिर्जापुर में विद्यमान विन्ध्यांचल धाम भारत के मुख्य धार्मिक तीर्थ स्थानों में से एक है। उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर जिले के अमरावती चौराहा के स्थान से राष्ट्र का अन्तर्राष्ट्रीय मानक समय लिया गया है। मिर्जापुर 'लाल स्टोन' हेतु सर्वाधिक रूप से प्रसिद्ध है। भारत का राष्ट्रीय चिन्ह के निर्माण हेतु इसका उपयोग महान सम्राट अशोक ने किया था। मिर्जापुर की भाषा भोजपुरी या हिन्दी है।

मिर्जापुर जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से उनको खेल गतिविधियों में सहभागिता की प्रेरणा मिलने से सम्बन्धित मौलिक तथ्यों के सर्वेक्षण का कार्य करते समय साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर मौलिक समकों का संकलन किया गया है। इन प्राथमिक समकों के सरलीकरण करने हेतु वर्गीकरण के साथ सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है, जो इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक 1
विद्यार्थियों को क्षेत्र गतिविधियों में सहभागिता करने की प्रेरणा का विवरण

क्र.	वर्गीकरण का विवरण	विद्यार्थियों से प्राप्त आयु संरचना का विवरण	
		विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	अभिभावकों की प्रेरणा से	546	42.66
2	आत्मप्रेरण से	466	36.41
3	मित्रों को देखकर	143	11.17
4	किसी काफी विशेष से प्रभावित होकर	125	9.76
	कुल योग	1280	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण



आरेख क्रमांक 1 : विद्यार्थियों को क्षेत्र गतिविधियों में सहभागिता करने की प्रेरणा का विवरण।

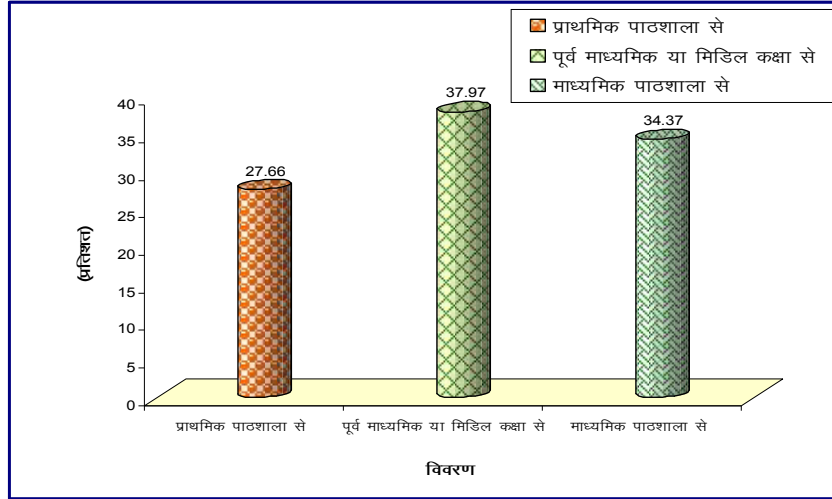
उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 एवं आरेख को देखने से प्रतीत होता है कि यह विद्यार्थियों को खेल गतिविधियों में सहभागिता करने की प्रेरणा के विवरण से सम्बन्धित है। शोधकर्ता द्वारा चयनित किये गये कुल 1280 विद्यार्थियों में 546 विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि अभिभावकों की प्रेरणा से खेल गतिविधियों में सहभागिता किये हैं, जिनके प्रतिशत 42.66 है, 466 विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि खेल गतिविधियों में हिस्सा आत्मप्रेरण से किया है, जिनके प्रतिशत 36.41 है, 143 विद्यार्थियों ने अभिमत दिया कि खेल गतिविधियों में भाग मित्रों को देखकर लिया, जिनके प्रतिशत 11.17 है और 125 विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि किसी व्यक्ति विशेष से प्रभावित होकर खेल गतिविधियों में भाग लिया है, जिनके प्रतिशत 9.76 है।

अध्ययन क्षेत्र की तहसीलों के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से प्राथमिक स्तर पर चयनित किये गये विद्यार्थियों से खेल गतिविधियों से जुड़ने की वास्तविक स्थिति का आकलन करने हेतु सर्वेक्षण के दौरान साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग कर प्राथमिक तथ्यों का संग्रहण किया गया है। इन प्राथमिक समकों से निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु वर्गीकरण के साथ सारणी क्रमांक 2 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक व्याख्या की गयी है –

सारणी क्रमांक 2
विद्यार्थियों का खेल गतिविधियों से जुड़ने का विवरण

क्र.	वर्गीकरण का विवरण	विद्यार्थियों से प्राप्त आयु संरचना का विवरण	
		विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	प्राथमिक पाठशाला से	354	27.66
2	पूर्व माध्यमिक या मिडिल कक्षा से	486	37.97
3	माध्यमिक पाठशाला से	440	34.37
	कुल योग	1280	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण



आरेख क्रमांक 2 : विद्यार्थियों का खेल गतिविधियों से जुड़ने का विवरण।

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 2 एवं आरेख को देखने से प्रतीत होता है कि यह विद्यार्थियों का खेल गतिविधियों से जुड़ने के विवरण से सम्बन्धित है। शोधकर्ता द्वारा जिले के माध्यमिक विद्यालयों से चयन किये गये कुल 1280 छात्रों में 354 विद्यार्थियों ने बतलाया कि प्राथमिक पाठशाला से ही खेल की गतिविधियों से जुड़े हैं, जिनके प्रतिशत 27.66 है। इसी प्रकार 486 विद्यार्थियों ने बतलाया कि विद्यार्थियों ने अभिमत व्यक्त किया कि पूर्व माध्यमिक विद्यालय से खेल की गतिविधियों से जुड़े हैं, जिनके प्रतिशत 37.99 है। इसी प्रकार 440 विद्यार्थियों ने स्वीकार किया है कि माध्यमिक पाठशाला से खेल की गतिविधियों से जुड़े हैं, जिनके प्रतिशत 34.37 है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जिले से चयन किये गये सबसे अधिक विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि खेल गतिविधियों में हिस्सा अभिभावकों की प्रेरणा से लिया है। जिले से चयन किये गये सबसे अधिक विद्यार्थियों ने बतलाया कि खेल गतिविधियों में हिस्सा पूर्व माध्यमिक विद्यालय से ले रहे हैं। खेल गतिविधियाँ व्यक्ति में अलग-अलग तरह के चरित्र निर्माण के गुणों को विकसित करता है, जिसकी प्राप्ति से ही विद्यार्थी एक अच्छा नागरिक, अच्छा खिलाड़ी, अच्छा शहरी तथा अच्छा इंसान बन सकता है। शारीरिक शिक्षा की क्रियाएँ विद्यार्थियों के मनोरंजन का स्रोत है तथा इनके माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन, त्याग एवं सहयोग के गुणों की शिक्षा मिलती है। जीवन की प्रत्येक समस्या विद्यार्थी खेल के मैदान में सीखी कला के माध्यम से जीत पाने में सक्षम हो जाता है। खेलों के मैदान को अच्छे नागरिक बनाने की उद्योग अगर कहा जाये तो शायद कदापि अनुचित नहीं होगा।

संदर्भ –

1. अदावल, एम.सी. – एजूकेशन रिसर्च इन इंडिया, ईयर बुक, नई दिल्ली, संस्करण 1968
2. बालायण, डॉ. देवेन्द्र – स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, खेल साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली, संस्करण 2002
3. कपिल, एच.के. – अनुसंधान विधियाँ, हर प्रसाद भार्गव, आगरा, संस्करण 1997
4. कापड़ी, बी.सी. – शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद, बी.आर. इन्टरनेशनल पब्लिकेशन, दिल्ली, संस्करण 2005
5. गंगवार, बी.आर. – शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद में परीक्षण मापन एवं मूल्यांकन, ए.पी. पब्लिसर्स, जालन्धर, संस्करण 2003
6. गुप्ता, यू.सी. – खेल प्रविधि एवं शारीरिक शिक्षा, खेल साहित्य केन्द्र, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2006
7. चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी – वर्तमान भारतीय शिक्षा, समाज और भ्रष्टाचार, रिसर्च जनरल आफ सोसल एण्ड लाइफ साइंसेस, वाल्यूम 2, वर्ष 01, संस्करण 2007
8. पाण्डेय, लक्ष्मीकान्त – भारतीय खेलों की मीमांसा, यूनाइटेड प्रिंटिंग प्रेस कम्पनी, दिल्ली, संस्करण 1982
9. सिंह, अजमेर व अन्य – शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान, कल्याणी प्रिंटिंग, बी-15, सेक्टर-18, नोएडा, संस्करण 2004
10. शर्मा, देवव्रत आचार्य – आसन-प्राणायाम (वैज्ञानिक विवेचना एवं चिकित्सा) स्पीडोग्राफिक्स, बी-20, नई दिल्ली, संस्करण 2000
11. प्रकाश, ओम एवं नायक, पी.के. – उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर योग शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन (झारखण्ड के पूर्वी सिंहभूम जिले के संदर्भ में), इन्टरनेशनल जर्नल आफ एडवान्स्ड एजूकेशन एण्ड रिसर्च, वाल्यूम 3, इसू 3, मई 2018
12. बुच, एम.बी. – फिथ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, संस्करण 1998
13. पाण्डेय, पी.एन. – क्रीड़ा एवं व्यवस्था, सरस्वती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 1998
14. विश्वास, टी.के. एण्ड चोपड़ा, के.एस. – गेम्स इन इंडियन मीनीएचर्स, पब्लिकेशन सेल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, संस्करण 1982
15. विश्नोई, यू. – खेल एवं शारीरिक शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, संस्करण 2007
16. शर्मा, एस. (1996) – शारीरिक शिक्षा तथा खेलकूद, पीयूष प्रिन्टर्स पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, संस्करण 1996
17. शर्मा, बी.डी. – खेलकूद एवं यौगिक व्यायाम, आर्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण 2001
18. शर्मा, एन.पी. (2003) – शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त और इतिहास, शेल साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली, संस्करण 2003
19. कमलेश, एम.एल. – शारीरिक शिक्षा के तथ्य एवं आधार, पी.पी. पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद, संस्करण 1988